जाड़े का एक जादू

Gillette Audio — नंदो द स्क्राइब — gillettenarrative.com

एक गर्म भूमध्यसागरीय शहर ने, इतालवी सरहदों के भीतर, इकसठ बरस तक मुझे पनाह दी थी: एक बेचैन देह जो अपना असली आयाम खोज रही थी, और एक मन जो पहले से ही अमेरिका में रह रहा था।

मेरा अमेरिका। वह जो झंडा देखते ही मुझे रुला देता था, मेरी धड़कन को असंभव तरीक़ों से तेज़ कर देता था। वह जो एक दिन मुझे पनाह देगा, अपनी मिट्टी की गहराई में मेरा स्वागत करने का इंतज़ार करता हुआ।

उसी दिन मेरी चाची का फ़ोन आया। उसने बताया कि मेरे दादा-दादी गुज़र गए। बुढ़ापा।

तीन सौ किलोमीटर हमारे बीच थे, पर कोई चीज़, कोई इंसान मुझे रोक नहीं सकता था। मैं अपनी कार में बैठा और चल पड़ा। चार घंटे बाद मैं पहुँच गया।

घर बंद था। एक पड़ोसन ने, मुझे देखते ही, अभिवादन किया और कॉफ़ी के लिए भीतर बुलाया। पर मेरा वक़्त वह नहीं था।

मेरे पास घर की चाबियाँ हमेशा रहती थीं। एक ठेठ फ्रेगा लक्षण: समस्या को रोक देना हमेशा उससे बेहतर है कि बाद में समाधान ढूँढ़ना पड़े। हम यही थे।

मैं भीतर गया। मुझे अब भी घर की गंध आ रही थी, कमरों की, अलमारियों की, रसोई की, और उस अँगीठी की जिसने 1977 की सर्दियों में मेरा साथ दिया था, जब मैं बस बारह बरस का था। जो कुछ चला गया था, वह अब वहाँ नहीं था। पर यादें अब भी वहीं थीं।

प्रवृत्ति ने मुझे अटारी की ओर खींचा।

दो नन्हे चूहों ने मेरा स्वागत किया। ज़रा भी डरे हुए नहीं। वे वहाँ ऐसे थे जैसे मेरा इंतज़ार कर रहे हों, जैसे उन्हें मुझे किसी चीज़ की ओर ले जाना हो।

वे मुझे एक गत्ते के सूटकेस तक ले गए, बंद, धूल की मोटी परत से ढका।

उत्सुकता ने मुझे उसे खोलने पर मजबूर किया। दोनों चूहे संतुष्ट दिखे, जैसे उन्होंने अपना काम पूरा कर लिया हो।

भीतर मुझे एक नोटबुक मिली।

एक अनोखी लिखावट, सारी बड़े छपे अक्षरों में, जिसे पहचानने में कोई भूल नहीं हो सकती। वह मेरे पिता की थी।

एक कहानी पर तारीख़ थी: 21 फ़रवरी 1955। संयोग से, ठीक मेरे जन्म का दिन — बस साल अलग था। उन्होंने वे पंक्तियाँ मेरे दुनिया में आने से दस साल पहले लिखी थीं।

वे ईश्वर को लिख रहे थे।

उन्होंने एक परिवार माँगा, एक पत्नी, और बच्चे। और ख़ासकर एक: एक लड़का। वे उसका नाम फेर्दिनान्दो रखेंगे, अपने पिता के नाम पर। पर उनकी माँग वहीं ख़त्म नहीं होती थी।

मैं ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। मुझे डर था कि नोटबुक भीग जाएगी, तो मैं बिना आँसुओं के सिसकने वाले तरीक़े पर चला गया। वही जो मैं ज़िंदगी में सिर्फ़ स्त्रियों की मौजूदगी में इस्तेमाल करता था — उन्हें हथियार डलवाने के मेरे तरीक़ों में से एक, मेरे धोखे के तरीक़ों में से एक। मैं फ्रेगा हूँ।

उन्होंने कैसा बेटा चाहा था, इसका उनका वर्णन विस्तृत था। और बात को खींचे बिना, आख़िर में मैंने ख़ुद को वहाँ पाया। जो मैं हूँ।

और वह उन क्षणों में से एक था जब मैंने ख़ुद से सिर्फ़ एक सवाल पूछा:

मेरे पिता कौन थे?

बाक़ी काम वंशावली ने किया। क्योंकि उस सवाल के साथ, मेरे उपनाम के साथ, जो मैं हूँ उसके साथ, लोग आज हमेशा वही चीज़ पूछते हैं:

क्या फ्रेगा असली हैं, या वे ठग हैं?

थोड़ा दोनों। हम फ्रेगा हैं।

मेरे पिता ने ईश्वर से एक बेटा माँगा।

ईश्वर ने माँग पूरी की।

पर डिलीवरी ग़लत हो गई।

मॉडल अमेरिकी था।

वह इटली पहुँच गया।

नान्दो

© 2026 Ferdinando Frega — सर्वाधिकार सुरक्षित
Gillette Audio — संयुक्त राज्य अमेरिका में कॉपीराइट पंजीकरण प्रक्रियाधीन